आर. एन. आई. 31109/77

JaipurCity / 224 / 2021-23

वर्ष : 45
अंक : 12

सितम्बर (द्वितीय), 2022
वीर नि.संवत्-2548

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

संस्थापक सम्पादक
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक
डॉ. संजीवकुमार गोधा

सह-सम्पादक
पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

वार्षिक शुल्क : 25 रुपये | 17 सितम्बर 2022, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- | आजीवन शुल्क : 251 रुपये

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के प्रांगण में....

पर्वाधिराज दशलक्षण महापर्व सानन्द सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के तत्त्वावधान में पर्वाधिराज दशलक्षण महापर्व के पावन प्रसंग पर 31 अगस्त से 9 सितम्बर 2022 तक श्री दशलक्षण महामण्डल विधान का भव्य आयोजन पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री के निर्देशन में विश्लेषण पूर्वक किया गया, जिसमें पण्डित समकितजी शास्त्री, पण्डित आयुषजी शास्त्री, पण्डित दिव्यांशजी शास्त्री, आर्जव गोधा एवं अनमोल जैन का विशिष्ट सहयोग रहा।

दैनिक कार्यक्रमों में प्रात: अरिहन्त चैनल पर डॉ. भारिल्ल के प्रवचन प्रसारण के उपरान्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के **शान्तिपाठ, चौबीस तीर्थंकर पूजन-जयमाला, देव-शास्त्र-गुरु पूजन-जयमाला एवं सिद्धचक्रविधान पूजन-जयमाला** पर विशेष व्याख्यानों का लाभ मिला। साथ ही पण्डित अरुणजी शास्त्री बण्ड द्वारा सर्वविशुद्धज्ञानाधिकार विषय पर प्रवचन हुए। तत्पश्चात् गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन का लाभ मिला। दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र का पाठ एवं डॉ. ज्योतिजी सेठी व विदुषी स्वस्तिजी शास्त्री, जयपुर द्वारा तत्त्वार्थसूत्र विषय पर कक्षा के पश्चात् पण्डित गौरवजी शास्त्री उखलकर द्वारा प्रथमानुयोग की कक्षा ली गई। सांयकाल 07 बजे से जिनेन्द्रभक्ति, दशधर्मों पर उपाध्याय कनिष्ठ के छात्रों द्वारा वक्तव्य एवं उपाध्याय वरिष्ठ के छात्रों द्वारा प्रवचन के अतिरिक्त पण्डित संयमजी शास्त्री नागपुर के मुख्य प्रवचन का लाभ मिला। अनेक ज्ञानवर्द्धक सांस्कृतिक कार्यक्रमों आयोजन भी किया गया। 11 सितम्बर को क्षमावाणी पर्व के अवसर पर बापूनगर सम्भाग द्वारा विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया।

प्रथम स्थान पर रही स्मारक की झाँकी

सुगंध दशमी के अवसर पर अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल द्वारा लिखित 'इन भावों का फल क्या होगा' पुस्तक की विषय वस्तु पर आधारित भव्य सजीव झांकी का सृजन ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में किया गया। अत्यन्त ज्ञानवर्धक, प्रेरणास्पद एवं अद्भुत दृश्यों से युक्त इस झांकी में जैन धर्म के कर्म सिद्धांत से सभी को परिचित कराया। साथ ही मुख्यद्वार पर प्राचीन आध्यात्मिक भजनों पर आधारित भजन संध्या आयोजित की गई। इस झाँकी ने विगत वर्षो की भाँति सम्भागिय स्तर पर **प्रथम स्थान** प्राप्त किया।

इस अवसर पर दिगम्बर जैन महासमिति के राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुरेन्द्रकुमारजी पांड्या, राजस्थान के आंचलिक अध्यक्ष श्री अनिलजी जैन तथा श्री सुनीलजी बज झांकी के अवलोकनार्थ पधारें। सभी के स्वागत हेतु श्री परमात्माप्रकाशजी भारिल्ल, श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री शान्तिलालजी गंगवाल, श्री हीराचन्दजी बैद, श्री निर्मलकुमारजी संघी, डॉ. राजेन्द्रकुमारजी जैन, श्री मनीषजी बैद आदि उपस्थित थे।

इस अवसर पर श्री विवेकजी काला की अध्यक्षता एवं श्री कुलदीपजी रांका के मुख्य आतिथ्य में झांकी का उद्घाटन श्री सुधांशुजी कासलीवाल ने किया। यह मनोरम झांकी पण्डित आकाशजी शास्त्री के संयोजन एवं आर्जव गोधा, स्वयं जैन, आर्जव खड़ैरी आदि महाविद्यालय के विद्यार्थियों की सहभागिता से सम्पन्न हुई।

झांकी की झलकियाँ

43

सम्पादकीय -

पण्डितप्रवर टोडरमलजी

- डॉ. संजीवकुमार गोधा

सातवें अध्याय का सार (जैन मिथ्यादृष्टियों का विवेचन)

(गतांक से आगे...)

उभयाभासी मिथ्यादृष्टि का स्वरूप....

इस सातवें अध्याय में उभयाभासी मिथ्यादृष्टि के प्रकरण के अंतर्गत अब निश्चय-व्यवहार के स्वरूप को और अधिक स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि व्यवहार नय स्वद्रव्य-परद्रव्य को, उनके भावों को एवं कारण-कार्यादि को किसी को किसी में मिलाकर निरूपित करता है।

यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि व्यवहार नय वस्तु को आपस में मिलाता नहीं है, मात्र मिली हुई निरूपित करता है। एक द्रव्य दूसरे द्रव्य से या एक द्रव्य का भाव दूसरे द्रव्य के भाव से मिल ही नहीं सकता - ऐसा वस्तु का स्वभाव है। दुनियाभर के लोग गूगल को सबसे ज्यादा ज्ञानी समझते हैं और कहते हैं कि गूगल से जो पूछो, वह तुरन्त बता देता है; परन्तु गूगल तो जड़ है, उसमें ज्ञान कैसे हो सकता है? प्रतिदिन दर्पण के सामने खड़े होकर मेरा रूप कितना अच्छा है, मेरी आवाज कितनी मधुर है - इसप्रकार दो द्रव्यों को आपस में मिलाकर कथन करता है; किन्तु वस्तुस्थिति ऐसी नहीं है। इसलिए व्यवहार का पक्ष छोड़कर निश्चय नय का श्रद्धान करना योग्य है।

यहाँ कोई कहे कि शास्त्रों में तो दोनों नयों का ग्रहण करना कहा है सो किसप्रकार? उससे कहते है कि जिनागम में कहीं तो निश्चयनय की मुख्यता से व्याख्यान है, उसे तो **'सत्यार्थ ऐसा ही है'** ऐसा जानना तथा कहीं व्यवहारनय की मुख्यता से व्याख्यान है, उसे **'ऐसा है नहीं, निमित्तादि की अपेक्षा उपचार किया है'** - इसप्रकार जानने का नाम ही दोनों नयों का ग्रहण है। दोनों नयों के व्याख्यान को समान सत्यार्थ जानकर **'ऐसा भी है और ऐसा भी'** - इसप्रकार भ्रमरूप श्रद्धान करने की बात तो शास्त्रों में कहीं भी नहीं है।

फिर वह कहता है कि यदि व्यवहारनय को असत्यार्थ जानकर छोड़ना ही है, तो जिनवाणी में उसका उपदेश दिया ही क्यों? एक निश्चयनय का ही निरूपण करते। समाधान करते हुए कहते हैं कि - जिसप्रकार अनार्य को अनार्य भाषा के बिना नहीं समझाया जा सकता, उसीप्रकार व्यवहारीजनों को व्यवहार की भाषा में ही निश्चय का उपदेश देते हैं; क्योंकि व्यवहार के बिना निश्चय का प्रतिपादन अशक्य है। आत्मख्याति में लिखते हैं कि **व्यवहारनयो नानुसर्त्तव्यः** अर्थात् व्यवहार नय अनुसरण करने योग्य नहीं है।

यहाँ कोई कहे कि व्यवहार के बिना निश्चय का उपदेश कैसे नहीं होता और व्यवहार को कैसे अंगीकार नहीं करना?

इन दोनों बातों को पण्डितजी ने तीन प्रकार से स्पष्ट किया। जैसे किसी को आत्मा समझना था, जिसके लिए समझाने वाले को ढूंढ रहा था। तभी एक व्यक्ति ने उससे कहा कि - 'यदि तुझे आत्मा को गहराई से समझना है तो जयपुर जाने वाली ट्रेन में बैठ और टोडरमल स्मारक चला जा; क्योंकि आत्मा समझने के लिए सर्वश्रेष्ठ जगह वही है।

(वह व्यक्ति अगले ही दिन जयपुर का टिकिटकराकर स्मारक पहुँचा)

स्मारक की स्थिति ऐसी है कि जिसे हाथ लगाओ वही विद्वान है।

वहाँ जाकर उसने एक विद्यार्थी से कहा कि - 'मुझे बड़े पण्डितजी से मिलना है, जो आत्मा समझा सकें।'

विद्यार्थी ने कहा - 'मैं ही समझा देता हूँ, बोलो कैसे समझना है? निश्चय से या व्यवहार से।'

उसने कहा - 'ये क्या होता है?'

विद्यार्थी ने जबाव दिया कि - 'निश्चय माने सच्ची बात कहने वाला और व्यवहार माने झूठी, लगावटी-मिलावटी बात करने वाला।'

वह व्यक्ति बोला - 'भाई! निश्चय से ही समझाओ, मुझे तो सच्ची आत्मा ही समझना है।'

तब विद्यार्थी ने समझाना शुरू किया कि **'निश्चय से तो आत्मा परद्रव्य से भिन्न, स्वभाव से अभिन्न स्वयंसिद्ध वस्तु है'** - 'समझ में आया? यदि नहीं आया हो तो दुबारा समझाऊँ। इसप्रकार बार-बार निश्चय से यही बात कहने पर भी उस नए व्यक्ति को आत्मा के बारे में कुछ भी समझ में नहीं आएगा। अत: उसे व्यवहार से मनुष्य, तिर्यंच आदि असमानजातिय द्रव्य-पर्यायों का सहारा लेकर समझाते हैं, तब उसे आत्मा की कुछ पहिचान होती है।

फिर उसने कहा कि आत्मा के बारे में और समझाओ तो विद्यार्थी ने कहा कि - **'निश्चय से तो आत्मा अभेद है।'**

किन्तु बारम्बार ऐसा कहने पर भी उसको आत्मा के बारे में भावभासन नहीं कराया जा सकता। अत: आत्मा के बारे में 'यह जो जानने वाला, देखने वाला जीव है, वही आत्मा है।' इसप्रकार व्यवहार नय से समझाया जाता है।

इसीप्रकार यदि उसे मोक्षमार्ग समझाते हुए मात्र वीतरागभाव को ही मोक्षमार्ग कहेंगे तो काम नहीं चलेगा; क्योंकि वह तो वीतरागभाव को जानता ही नहीं। अत: उसे परद्रव्य का निमित्त मिटाने की अपेक्षा व्यवहार से तत्त्वश्रद्धान, ज्ञानपूर्वक व्रत, शील, संयमादिरूप वीतरागभाव के विशेष करके समझाया, तब उसे सच्चे मोक्षमार्ग का ज्ञान हुआ।

अब व्यवहार नय कैसे अंगीकार नहीं करना?

पण्डितजी बताते हैं कि हमने शरीरादि की अपेक्षा व्यवहारनय से नर-नारकादि पर्याय को जीव कहा, वहाँ उस पर्याय ही को जीव नहीं समझ लेना; क्योंकि वह पर्याय तो जीव-पुद्गल के संयोगरूप है, जीव उससे भिन्न है।

(शेष पृष्ठ 8 पर...)

पर्वाधिराज दशलक्षण पर समाज का अध्यात्ममयी वातावरण

पर्वाधिराज दशलक्षण महापर्व 31 अगस्त से 9 सितम्बर 2022 तक अनेक स्थानों पर धूमधाम से मनाया गया।

दिल्ली : यहाँ आत्मसाधना केन्द्र आत्मार्थी ट्रस्ट में दशलक्षण पर्व के अवसर पर श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर दोनों समय ब्र. नन्ने भैयाजी सागर के व्याख्यानों के अतिरिक्त दोपहर में स्थानीय विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही पण्डित अशोकजी उज्जैन व पण्डित सुबोधजी शाहगढ़ का सान्निध्य रहा।

बैंगलोर (कर्नाटक) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन मन्दिर में दशलक्षण महापर्व के पावन अवसर पर प्रात: दशलक्षण महामण्डल विधान के पश्चात् आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन के अतिरिक्त बाल ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना के प्रात:काल धर्म के दशलक्षण व समयसार कलश पर एवं रात्रि में मोक्षमार्ग प्रकाशक विषय पर व्याख्यानों का लाभ मिला।

सोनागिर (म.प्र.) : यहाँ श्री परमागम श्रावक ट्रस्ट द्वारा श्री कुन्दकुन्द नगर में श्री दशलक्षण महामण्डल विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बाल ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन्' के दोपहर में धर्म के दशलक्षण पर मार्मिक प्रवचनों के अतिरिक्त डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर के प्रात: तत्त्वार्थसूत्र पर प्रवचन एवं रात्रि में समयसार के आधार से आचार्य कुन्दकुन्ददेव का साक्षात्कार लिया गया।

अशोकनगर (म.प्र.) : यहाँ श्री महावीर दिगम्बर जैन मन्दिर में श्री समयसार महामण्डल विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के प्रात: दशधर्म की मुख्यता से समयसार ग्रन्थ पर, दोपहर में उभयाभासी मिथ्यादृष्टि के स्वरूप व ज्ञान गोष्ठी पर तथा रात्रि में समयसार का सार विषय पर मार्मिक व्याख्यानों का लाभ मिला।

नागपुर (महा.) : यहाँ कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट द्वारा आयोजित कार्यक्रम में गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन तथा डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील द्वारा प्रातः स्वरूपसम्बोधन स्तोत्र एवं रात्रि में मेरी भावना विषय पर सारगर्भित प्रवचनों के अतिरिक्त दोपहर में विदुषी प्रतीतिजी मोदी की प्रत्यक्ष प्रमाण विषय पर कक्षा का लाभ मिला। स्थानीय विद्वानों द्वारा विविध ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रम कराए गए।

ध्यातव्य है कि 10 सितम्बर को क्षमावाणी पर्व के अवसर पर नागपुर स्थित वीतराग भवन में ज्ञानानन्द शास्त्री फाउण्डेशन महाराष्ट्र के तत्त्वावधान में नागपुर शास्त्री परिवार द्वारा डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील को अध्यात्म जगत में आसाधारण सहयोग देने हेतु **'अध्यात्म गौरव'** की उपाधि से अलंकृत कर सम्मानित किया गया।

औरंगाबाद (महा.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल के तत्त्वावधान में दशलक्षण महापर्व बहुत धूमधाम से मनाया गया, जिसमें प्रात: डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के साथ पण्डित संजयजी राऊत के विधानाचार्यत्व में डॉ. भारिल्ल द्वारा लिखित समयसार मण्डल विधान आयोजित हुआ। इस प्रसंग पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के प्रात: समयसार, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र एवं रात्रि में विविध विषयों पर सारगर्भित प्रवचन हुए। दोपहर की कक्षा देवलाली में एवं रात्रि का प्रवचन एटलान्टा में लाइव चलाया गया। जिनेन्द्र भक्ति एवं बालकक्षा के बाद प्रतिदिन विविध स्थानीय विद्वानों के प्रवचन हुए।

एक दिन विशेष रूप से भक्तिधारा संगीत कार्यक्रम में संगीत विशारद डॉ. कुशलकुमारजी जैन, संगीत अलंकार श्री मयूरजी जैन एवं कु. अवंतीजी जैन ने प्राचीन भजनों की प्रस्तुति दी।

आयोजन में 800–1000 साधर्मियों ने उपस्थित होकर एवं ऑनलाइन लगभग 10 हजार लोगों ने तत्त्वज्ञान का लाभ लिया। आयोजन श्री निशिकान्तजी जैन सहित मुमुक्षु मण्डल के निर्देशन में हुआ। अन्तिम दिन डॉ. गोधा की प्रेरणा से औरंगाबाद में जिनमन्दिर निर्माण हेतु सभी ने भावनाएँ व्यक्त की। **– गुलाबचन्द बोराळकर**

रतलाम (म.प्र.) : यहाँ दशलक्षण मण्डल विधान भक्तिभावपूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर द्वारा धर्म के दशलक्षण, जैसे भाव वैसा भव व देव–शास्त्र–गुरु के सामान्य स्वरूप विषय पर व्याख्यान हुए। विधान के सभी कार्य पण्डित अक्षयजी शास्त्री ने कराए। **– राजकुमार अजमेरा**

शिकागो (अमेरिका) : यहाँ दशलक्षण पर्व पर श्री भक्तामर मण्डल विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पण्डित संजयजी शास्त्री कोटा के प्रात: रत्नकरण्ड श्रावकाचार एवं सायंकाल संसार का स्वरूप विषय पर व्याख्यानों का लाभ मिला। साथ ही बच्चों द्वारा अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए।

भोपाल (म.प्र.) : यहाँ श्री 1008 महावीर दिगम्बर जैन समवशरण मन्दिर में श्री दशलक्षण मण्डल विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ. दीपकजी शास्त्री वैद्य के प्रात: समयसार व मोक्षशास्त्र, दोपहर में मोक्षमार्ग प्रकाशक एवं रात्रि में धर्म के दशलक्षण विषय पर व्याख्यान सम्पन्न हुए।

दादर–मुम्बई : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान जैन एजुकेशन ट्रस्ट दादर में श्री दशलक्षण महामण्डल विधान आयोजित हुआ। इस अवसर पर पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर के प्रातः समयसार एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। विधान श्री राजूभाई शाह मुंबई एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम पं. संयमजी शास्त्री ने कराए। साथ ही इन्टरनेशनल दिगम्बर जैन ऑर्गनाइजेशन अमेरिका जैन समाज के लिए वर्कशॉप ऑन जैनिज्म online माध्यम से हुई। **(शेष पृष्ठ 8 पर...)**

मंगल आमंत्रण

आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में, पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा संचालित

25वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर

दिनांक – रविवार, 02 अक्टूबर से रविवार, 09 अक्टूबर, 2022 तक

सद्धर्मप्रेमी बन्धुवर,

आपको सूचित करते हुए अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि राजस्थान की प्रसिद्ध गुलाबी नगरी जयपुर में आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सदुपदेश से संस्थापित ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले आध्यात्मिक शिक्षण शिविरों की शृंखला में 25वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर रविवार, 02 अक्टूबर 2022 से रविवार, 09 अक्टूबर, 2022 तक अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित आयोजित होने जा रहा है।

उक्त शिविर में समाज के विशेषज्ञ विद्वानों के प्रवचनों का कक्षाओं के माध्यम से जैनदर्शन के विविध विषयों का गहराई से अध्ययन कराया जायेगा। अत: अन्य शिविरों से पृथक् यह शिविर जैनदर्शन के सूक्ष्म अध्ययन के इच्छुक जिज्ञासुओं के लिये एक विशेष अवसर है।

इस अवसर पर अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के 'क्रमनियमित' विषय पर मार्मिक व्याख्यानों का लाभ मिलेगा।

शिविर के सम्पूर्ण कार्यक्रम श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, जयपुर एवं डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, जयपुर के कुशल निर्देशन में सम्पन्न होंगे।

शिविर के परमसंरक्षक

श्रीमती आरती–अशोककुमारजी पाटनी परिवार, सिंगापुर
श्रीमती कुसुम–प्रदीपजी, सुपुत्र तिलकजी–अरिहंतजी चौधरी परिवार, किशनगढ़
श्रीमती रेखा–संजयकुमारजी, सुपुत्र तीर्थेश, सुपुत्री मोक्षा दीवान परिवार, सूरत
श्रीमती कुसुम–महेन्द्रकुमारजी, सुपुत्र राहुलजी–विनीतजी गंगवाल परिवार, जयपुर
श्रीमती आशा–अशोककुमारजी बड़जात्या परिवार, इन्दौर
श्रीमती सुनीता–प्रेमचन्दज, सुपुत्र तन्मयजी–ध्याताजी बजाज परिवार, कोटा
श्री निशीकान्तजी जैन परिवार, औरंगाबाद
श्रीमती सुशीला–अजितप्रसादजी जैन सुपुत्र वैभवजी जैन परिवार, दिल्ली
श्री प्रमोदजी एवं अरुणजी मोदी परिवार मकरोनिया, सागर
श्री गौरवजी जैन, सुपुत्र श्री परितोषवर्धनजी जैन परिवार जनता कॉलोनी, जयपुर
श्रीमती मैंनादेवीजी ध.प. स्व. पूनमचन्दजी सेठी सुपुत्र अनिलजी–सुभाषजी–सुशीलजी सेठी परिवार, दिल्ली
श्री माणकचन्दजी जैन 'एडपैन वाले', मुम्बई
श्री कान्तिभाई मोटानी, विपुलभाई मोटानी परिवार, मुम्बई
श्री नितिनभाई सी. शाह परिवार, मुम्बई
श्री रमेशभाई मंगलजी मेहता हस्ते श्री निलेशभाई मेहता परिवार, मुम्बई
श्री अवनीशजी मोदी परिवार, मुम्बई
सावित्रीजी जैन, दमोह

ध्वजारोहण एवं शिविर उद्घाटन समारोह

अध्यक्ष	–	श्रीमान सुशीलकुमारजी गोदीका (अध्यक्ष – टोडरमल स्मारक)
मुख्य अतिथि	–	श्री महेन्द्रकुमारजी गंगवाल, जयपुर
ऑनलाइन अतिथि	–	श्री अनन्तभाईजी शेठ, मुम्बई
		श्री बसंतभाईजी दोशी, मुम्बई
		श्री महिपालजी ज्ञायक, बाँसवाड़ा
		श्री अशोकजी पाटनी, सिंगापुर
ध्वजारोहणकर्त्ता	–	श्री निहालचन्दजी–घेवरचन्दजी ओसवाल परिवार, जयपुर
मण्डप उद्घाटनकर्त्ता	–	श्री सी.ए. शान्तिलालजी, सी.ए. विपिनजी गंगवाल, जयपुर
मंच उद्घाटनकर्त्ता	–	श्री प्रदीपजी रपरिया, कलकत्ता
शिविर उद्घाटनकर्त्ता	–	श्री प्रेमचन्दजी बजाज एवं समस्त बजाज परिवार, कोटा
शिविर के मुख्य आमंत्रणकर्त्ता	–	श्रीमती शशि–सुरेशचन्दजी जैन, शिवपुरी
शिविर के आमंत्रणकर्त्ता	–	श्रीमान गुमानमलजी, आलोकजी–प्रतिभाजी, अश्विन–सरिताजी टोंग्या परिवार, जयपुर

चित्र अनावरणकर्त्ता

1. कुन्दकुन्द आचार्य	–	श्री ताराचन्दजी सौगानी, जयपुर
2. धरसेन आचार्य	–	श्री अखिलजी–चारूजी जैन, आर्यन जैन, जयपुर
3. आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी	–	श्री तन्मयजी, ध्याताजी बजाज, कोटा
4. आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी	–	श्री शान्तिलालजी चौधरी, भीलवाड़ा

पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह

अध्यक्ष	–	डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल
मुख्य अतिथि	–	श्री प्रदीपजी चौधरी, किशनगढ़
विशिष्ट अतिथि	–	श्री विनीतजी गंगवाल, जयपुर
		श्री शुभमजी एवं यशजी गंगवाल, जयपुर
		सी.ए. प्रदीपजी, आशीषजी जैन, जयपुर
		श्री गौरवजी जैन, दक्ष प्रकाशन जयपुर
पुरस्कार वितरणकर्त्ता	–	श्री प्रेमचन्दजी जैन एडवोकेट, दौसा
		श्री गौरवजी, परितोषवर्धनजी जैन, जयपुर

इस अवसर पर श्रीमान विपुलभाई मोटानी मुम्बई, श्रीमान नितिनभाई शाह मुम्बई, श्रीमान अशोकजी सुभाष ट्रांसपोर्ट भोपाल, श्रीमान मंगलसेनजी जैन दिल्ली, श्रीमान प्रमोदजी जैन मकरोनीया आदि अनेक गणमान्य अतिथि भी पधार रहें हैं।

निवेदक

सुशीलकुमार गोदिका
अध्यक्ष

डॉ. हुकमचंद भारिल्ल
महामंत्री

एवं समस्त ट्रस्टीगण पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट

सम्पर्क सूत्र : 8949033694

दैनिक कार्यक्रम

प्रात:

5.15 से 6.00	: प्रौढ़कक्षा	
6.08 से 6.40	: अरिहंत चैनल पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचन प्रसारण	
6.45 से 7.45	: नित्यनियम पूजन	
8.15 से 9.00	: आध्यात्मिक सत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी का सी.डी. प्रवचन	
9.00 से 10.00	: 'क्रमनियमित' विषय पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचन	
10.15 से 11.00	: विभिन्न कक्षायें	
	1. प्रवचनसार सुखाधिकार	– पं. अभयकुमारजी, देवलाली
	2. परमानन्दस्तोत्र	– डॉ. शान्तिकुमारजी, पाटील, जयपुर
	3. कालचक्र	– डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर
	4. छहढाला –3 ढाल	– पं. जिनकुमारजी शास्त्री, जयपुर

दोपहर

1.30 से 2.15	: विभिन्न कक्षायें	
	1. मोक्षमार्ग प्रकाशक	– पं. पीयूषजी शास्त्री, जयपुर
	2. जैनन्याय का परिचय	– डॉ. वीरसागरजी, दिल्ली
	3. महावीराष्टक	– पं. धर्मेन्द्रजी शास्त्री, कोटा
	4. परीक्षामुख (1–2 अध्याय)	– पं. संयमजी शास्त्री, नागपुर
2.15 से 3.00	: विभिन्न कक्षायें	
	1. मिथ्याचारित्र का अन्यथारूप	– पं. अभयकुमारजी, देवलाली
	2. अणुव्रत अधिकार	– पं. जिनकुमारजी शास्त्री, जयपुर
	3. तत्त्वार्थसूत्र (2 अध्याय)	– डॉ. प्रवीणजी शास्त्री, बाँसवाड़ा
	4. तत्त्वार्थसूत्र (1 अध्याय)	– डॉ. मनीषजी शास्त्री, मेरठ
3.30 से 4.15	: विभिन्न कक्षायें	
	1. हेतु हेत्वाभास/स्वयंभू स्तोत्र	– डॉ. वीरसागर जी, दिल्ली
	2. सर्वज्ञ–सिद्धि(प्रमेयरत्नमाला)	– पं. संयमजी शास्त्री, नागपुर
	3. न्यायदीपिका	– पं. पीयूषजी शास्त्री, जयपुर
	4. देव–शास्त्र–गुरू	– पं. धर्मेन्द्रजी शास्त्री, कोटा
4.15 से 5.00	: विभिन्न कक्षायें	
	1. समयसार (गा. 13–14)	– डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, जयपुर
	3. श्रुत–परम्परा	– डॉ मनीषजी शास्त्री, मेरठ
	2. सामान्य श्रावकाचार	– डॉ. दीपकजी शास्त्री, जयपुर

सांय

6.15 से 7.00	: विभिन्न कक्षायें	
	1. नयचक्र : निश्चय–व्यवहार	– डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर
	2. ग्यारह प्रतिमायें	– डॉ. दीपकजी शास्त्री, जयपुर
	3. 14 गुणस्थान	– डॉ. प्रवीणजी शास्त्री, बाँसवाड़ा
7.30 से 8.00	: श्री जिनेन्द्र भक्ति	
8.00 से 8.45	: प्रथम प्रवचन	
8.45 से 9.30	: द्वितीय प्रवचन	

विशेष अनुरोध – कृपया आमंत्रण पत्रिका को मंदिरजी या सब देख सकें ऐसे सार्वजनिक स्थान पर अवश्य लगा देवें।

विश्व की नव–निर्मित अद्वितीय रचना ढाईद्वीप जिनायतन के....

पंचकल्याणक महोत्सव का देशभर में आमंत्रण

श्री कुन्दकुन्द कहान शासन प्रभावना ट्रस्ट इंदौर के तत्त्वावधान में निर्मित भव्य ढाईद्वीप जिनायतन का श्रीमद्जिनेन्द्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव २० से २६ जनवरी २०२३ तक सम्पन्न होने जा रहा है। निश्चित तौर पर यह विश्व का सबसे विशाल व अद्वितीय पंचकल्याणक होगा, जिसमें साधर्मियों को आमंत्रित करने व प्रचार की दृष्टि से ढाईद्वीप की रचना सादृश मनोरम रथ तैयार किया गया है।

दशलक्षण महापर्व के अवसर पर देश की चारों दिशाओं में ढाईद्वीप की ५ से भी अधिक टीमों एवं २०० से अधिक विद्वानों ने दश दिन में गुजरात, मध्यप्रदेश, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र आदि राज्यों के लगभग 500 से अधिक स्थानों पर आमंत्रण दिया। गुरुदेवश्री की साधनाभूमि सोनगढ़ से इस प्रचार की शुरूवात की गई। पण्डित बिपिनजी शास्त्री मुम्बई, डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी जयपुर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री, डॉ. विवेकजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित महावीरजी पाटील के अलावा रथ पर पण्डित सुमितजी शास्त्री रहे। जिसकी कुछ झलकियाँ आपके सामने हैं –

वस्त्रापुर

मल्हारगंज इन्दौर

औरंगाबाद

नवरंगपुरा

सोनागिर

दलपतपुर

भोपाल

दादर

विदिशा

आरोन

राघौगढ़

ललितपुर

मुम्बई

नागपुर

खनियांधाना

अशोक नगर

लवाण

अलवर

ग्वालियर

पुणे

गुना

सिलवानी

देवली

शिवपुरी

कोलारस

सभी स्थानों पर समाज में पंचकल्याणक नें इन्दौर आने हेतु अपने भाव प्रदर्शित किए और सैकड़ों कलशों की वुकिंग कर लाभ भी लिया। ढाईद्वीप पंचकल्याणक के लिए पूरे देश में एक अपूर्व उत्साह की लहर देखने मिली।

(पृष्ठ 3 का शेष...)

देवलाली (महा.) : यहाँ पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट में श्री दशलक्षण मण्डल विधान एवं आध्यात्मिक व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा द्वारा दोपहर में नाटक समयसार एवं रात्रि में रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर व्याख्यानों का लाभ मिला। साथ ही डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा तत्त्वार्थसूत्र की ऑनलाइन कक्षा संचालित हुई। विधान के समस्त कार्य पण्डित उर्विशजी शास्त्री व पण्डित समकितजी शास्त्री द्वारा कराये गए।

बोरीवली-मुंबई : यहाँ श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर बोरीवली में श्री दशलक्षण महामण्डल विधान सानन्द सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर डॉ. प्रवीणजी शास्त्री बाँसवाड़ा के प्रातः समयसार के सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार पर, दोपहर में दशकरण विषय पर एवं रात्रि में पुरुषार्थ से मोक्ष प्राप्ति विषय पर मार्मिक व्याख्यानों का लाभ मिला। विधान के समस्त कार्य पण्डित आदित्यजी पिड़ावा एवं पण्डित रजतजी कापरेन द्वारा किए गए।

बेलगावी (कर्नाटक) : यहाँ श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर चिकवस्ती में पर्व के अवसर पर पण्डित मिथुनजी शास्त्री के प्रातः इष्टोपदेश तथा रात्रि में दशलक्षण धर्म व सोलह कारण पर विशेष व्याख्यान सम्पन्न हुए। यहाँ विशेष कार्यक्रम के रूप में नए युवाओं को धर्म से जोड़ने के लिए उन्हें प्रात: एक घंटे के लिए बुलाकर अभिषेक, जाप, प्रतिदिन एक-एक नियम और एक-एक धर्म के स्वरूप को संक्षिप्त में समझाया गया।

खनियांधाना (म.प्र.) : यहाँ श्री नेमिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में दशलक्षण महापर्व पर पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री जयपुर द्वारा प्रातः समयसार एवं रात्रि में दशधर्म व मिथ्याचारित्र का स्वरूप विषय पर मार्मिक व्याख्यान हुए। दोपहर में पण्डित अशेषजी शास्त्री द्वारा गुणस्थान विषय पर कक्षा लगाई गई। स्थानीय विद्वानों द्वारा तत्त्वज्ञान से भरपूर अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए।

अन्य स्थानों के शेष समाचार आगामी अंक में दिए जायेंगे।

(पृष्ठ 2 का शेष...)

आत्मा को ज्ञान, दर्शनादि भेद करके समझाया, पर इसे परमार्थ नहीं समझना; क्योंकि निश्चयनय से तो आत्मा अभेद ही है। इसीप्रकार हमने व्रत, शील, संयमादि को मोक्षमार्ग कहा; सो वह वास्तविक मोक्षमार्ग हैं नहीं; क्योंकि परद्रव्य का ग्रहण और त्याग तो जीव के होता ही नहीं है। परमार्थ से तो रागादि के घटने का नाम ही वीतरागता है, वही सच्चा मोक्षमार्ग है। व्यवहार नय का उपदेश समझने-समझाने के लिए है, अंगीकार करने योग्य नहीं - ऐसा जानना।

इसप्रकार निश्चय-व्यवहार का निरूपण कर उन्हें किसप्रकार ग्रहण करना तथा व्यवहार नय उपयोगी कैसे है और अंगीकार करने योग्य क्यों नहीं है - इत्यादि बातों को स्पष्ट किया। **(क्रमशः)**

श्वेताम्बर पर्यूषण पर्व पर डॉ. संजीव गोधा

मुम्बई : यहाँ दिनांक 26 अगस्त से 30 अगस्त 2022 तक श्वेताम्बर पर्यूषण के अवसर पर अध्यात्म स्टडी सर्किल के तत्त्वावधान में चौपाटी स्थित भारतीय विद्या भवन के विशाल सभागृह में अध्यात्मवेत्ता डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के प्रात:काल ग्रन्थाधिराज समयसार (कर्ताकर्माधिकार) पर प्रवचन का साधर्मियों ने लाभ लिया। इसी बीच एक दिन वालकेश्वर स्थित कमला भवन में भी आपके प्रवचन हुए। सायंकाल जबेरी बाजार के सीमन्धर जिनालय में समाधि और सल्लेखना विषय पर व्याख्यन हुए। इसके अतिरिक्त स्थानीय विद्वानों में पण्डित बिपिनजी शास्त्री, डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी जैन, विदुषी स्वानुभूतिजी शास्त्री, पण्डित किशोरजी शास्त्री, पण्डित जिनेशजी सेठ, पण्डित मन्थनजी गाला आदि के प्रवचन भी हुए।

जैन शास्त्र, भक्ति गीत, तीर्थ दर्शन व पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य व अनेक जानकारियों के लिये vitragvani app Download करें या Visit करें - www.vitragvani.com
विविध चित्रों के लिए Visit करें - www.gurukahanartmusuem.org
Daily updates :- vitragvani vitragvani Telegram
संपर्क सूत्र - श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

प्रकाशक व मुद्रक : ब्र. यशपाल जैन द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458, 7412078704
E-Mail : veetragvigyanjpp@gmail.com

प्रकाशन तिथि : 13 सितम्बर 2022

प्रति,